Bal Bharati
PUBLIC SCHOOL
Sector – 21, Noida
Phone : 0120-2534064, 2538533 / E-mail : bbpsnd@yahoo.co.in
Website : http://bbpsnoida.balbharati.org

Circular No.55/2019-20 Date : 05 Sep, 2019

NEGATIVE PEER PRESSURE FOR A YOUNG TEEN

Dear Parents,

Adolescence can be a difficult time for a child as he/she is undergoing rapid physical changes as well as emotional ups and downs. It's the time when personality of a teen undergoes transformation and the need to assert oneself becomes stronger. Peer relationships gain importance and spirit of exploration and experimentation sets within the teen.

- These days teenagers live in a world that is heavily influenced by digital devices and online platforms. Since the inception of social networking, the quality of personal interaction has dropped, people are spending so much time online that they don't always understand the feeling, emotion and/or character of the person they are talking to.

- There have been instances where children have become victims of cyber bullying, since anyone can create a fake account, it has become quite easy to bully on the Internet.

- Threats, intimidation, messages and rumors can be sent to the masses to create discomfort and chaos in the society.

- Information gathered from these digital sources may not be correct or maybe too much for their still immature minds to fathom. Uncensored depiction of sexually inappropriate content on television and online and availability of violent video games are some of the causes that result in instances of bullying.

- The pressure of being accepted by peers, use of foul language, physical intimacy, making sexual laden remarks are some of the other issues leading to decline in academic performance, which are a cause of worry and strain for the school as well as parents.

- In such a stressful scenario, the role of teachers and parents has become very challenging wherein we need to be physically and emotionally available to the teens.

- Parents and the school play a crucial role in building the character of a child by instilling values, belief and essential life skills to attain a successful and meaningful life. It is therefore the joint responsibility of both the parents as well as the school to monitor and inculcate good value systems in the children.

- Therefore, it is reiterated that while the school does not shy away from its responsibility. It is informed to all the parents that any kind of violation of code of conduct by the student will not be pardoned and will be dealt seriously with adverse consequences.

It is expected from the parents that they will support the school in tackling and overcoming the problems that come up in adolescents and help the children keep away from the perils of the modern world.

Asha Prabhakar
(Principal)
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Distribution

VPL, HM (Sr), HM (Pr), HM (PP)
Staff, Website, File

Bal Bharati
PUBLIC SCHOOL
Sector – 21, Noida
Phone : 0120-2534064, 2538533 / E-mail : bbpsnd@yahoo.co.in
Website : http://bbpsnoida.balbharati.org

Circular No.55/2019-20 Date : 05 Sep, 2019

युवा किशोर पर हम उम्र संगति का दुष्प्रभाव
(कक्षा-आठवीं से बारहवीं के छात्रों हेतु)

प्रिय अभिभावकगण,

बच्चे की जिंदगी में किशोरावस्था ऐसा कठिन समय है जिसमें शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर अनेक उतार-चढ़ाव के साथ-साथ तीव्र गति से बदलाव भी आते हैं। यह ऐसा समय है जब किशोर/किशोरी के व्यक्तित्व में बदलाव आते हैं, उसकी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की कुशलता में वृद्धि होती है। इस उम्र में बच्चे हमउम्र दोस्ती को अधिक महत्त्व देते हैं और उनके अंदर नई-नई बातों की खोज करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

- इन दिनों किशोर वर्ग डिजिटल उपकरणों तथा ऑन-लाइन मंच से अत्यधिक प्रभावित हो रहा है। जब से सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उनके जीवन में प्रवेश हुआ है, तब से व्यक्तिगत तौर पर बातचीत के स्तर में गिरावट आई है। लोग अपना अधिक से अधिक समय सोशल मीडिया साइट्स पर व्यतीत कर रहे हैं तथा एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में असमर्थ हैं।
- अनेक ऐसे उदाहरण हमारे सामने प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं। जहाँ बच्चे एक ओर साइबर बुलिंग का शिकार हो रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर इंटरनेट पर अवैध खाते खोलकर लोगों को अभद्र भाषा में टिप्पणियाँ करके प्रताड़ित भी कर रहे हैं।
- इंटरनेट पर धमकियों, चेतावनियों, संदेशों व अफवाहों को फैलाकर समाज व जनता को गुमराह करने के साथ-साथ अराजकता भी फैला रहे हैं।
- इन डिजिटल स्रोतों से प्राप्त अनावश्यक जानकारी बच्चों के अपरिपक्व मन पर भी कुप्रभाव डाल सकती है। सामाजिक स्तर पर अमान्य व अनुचित यौन संबंधी बातें व हिंसात्मक वीडियो गेम्स, जो कि टी0वी0 तथा ऑनलाइन देखे व खेले जा सकते हैं, वे बच्चों को मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने का प्रमुख कारण बन गए हैं।
- मित्रों व दोस्तों द्वारा डाला गया मानसिक दबाव तथा अनुचित शब्दों का प्रयोग, शारीरिक अंतरंगता, यौन-संबंध बनाना, टिप्पणियाँ करना आदि ऐसे मुद्दे हैं, जो बच्चों को उच्च स्तर का शैक्षिक प्रदर्शन नहीं करने देते। ये मुद्दे स्कूल के साथ-साथ माता-पिता के लिए भी चिंता का विषय बनते जा रहे हैं।
- इस प्रकार के तनावग्रस्त माहौल में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका अत्यंत चुनौतीपूर्ण है, जहाँ उन्हें किशोर/किशोरियों को समय देने, उनसे बातचीत करने हेतु शारीरिक व मानसिक स्तर पर हमेशा तत्पर रहना होगा।
- किशोर/किशोरियों के व्यक्तित्व को निखारने, उनमें जीवन-मूल्यों को पोषित करने, उन्हें विश्वस्त बनाने तथा उनमें अनिवार्य जीवन-कौशल विकसित करने में अभिभावकों तथा स्कूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इसलिए यह अभिभावकों तथा स्कूल की सामूहिक ज़िम्मेदारी है कि बच्चों पर निगाह रखें तथा उनमें अच्छे गुण विकसित करें।
- इस संदर्भ में विद्यालय ने कभी भी अपनी ज़िम्मेदारी से इंकार नहीं किया। सभी अभिभावकों को यह सूचित किया जाता है कि किसी भी प्रकार से छात्र द्वारा आचार-संहिता (Code of Conduct) भंग करने पर उसे क्षमा नहीं किया जाएगा तथा उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

अतः अभिभावकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे छात्रों की समस्याओं को समझने, उनका हल करने की दिशा में स्कूल का सहयोग करेंगे तथा छात्रों को आधुनिक समाज के खतरों से आगाह करेंगे। यदि आपको घर में छात्र संबंधी कोई ऐसा संकेत मिलता है, जो उसे शक के घेरे में ले आता है तो कृपया विद्यालय की प्रधानाचार्या से निःसंकोच मिलें तथा सारा विवरण दें। विद्यालय छात्रों के हित के लिए कटिबद्ध है, अतः वह छात्र के साथ बातचीत/ परामर्श इत्यादि करके आपकी समस्या का निश्चित तौर पर समाधान करेगा। इस संबंध में आपके द्वारा दी गई व्यक्तिगत सूचना को किसी अन्य के साथ साझा नहीं किया जाएगा।

आशा प्रभाकर
प्रधानाचार्या
आशा प्रभाकर
स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Distribution
VPL, HM (Sr), HM (Pr), HM (PP)
Staff, School Website
File